International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-07-2020; Accepted: 17-07-2020; Published: 03-08-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 4; 2020; Page No. 88-89

आधुनिक उपन्यास और ममता कालिया

हेमलता साहू [1], डॉ– रेशमा अंसारी [2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

प्रस्तावना

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गद्य साहित्य का प्रचार और भारतीय साहित्य में उपन्यास विधा का जन्म आधुनिक काल में हुआ। साहित्यिक विधा में उपन्यास अन्य विधाओं से पूर्णतः अलग एवं शीर्ष स्थान पर है क्योंकि उपन्यास मानव जीवन और समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है। मानव समाज को देखने, समझने और परखने का एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करता है। उपन्यास की बुनियाद यथार्थ के साँचे में ढली होती है। सामाजिक परिवर्तन से लेकर मानव जीवन के विविध रूपों को उद्घाटित करने में उपन्यास समर्थवान है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में – "वर्तमान जगत में उपन्यासों में बड़ी शक्ति है। समाज जो रूप पकड़ रहा है उके भिन्न–भिन्न वर्गों में जो प्रवृत्तियाँ उत्पन्न हो रही हैं, उपन्यास उन्का विस्तृत प्रत्यक्षीकरण ही नहीं करते, आवश्यकतानुसार उनके ठीक विन्यास, सुधार अथवा निराकरण की प्रवृत्ति भी उत्पन्न कर सकते हैं।

समाज के बीच खानपान के व्यवहार तक में जो भद्दी नकल होने लगी है–गर्मी के दिनों भी सूटबूट कसकर टेबुलों पर जो प्रीतिभोज होने लगा है–उसको हँसकर उड़ाने की सामर्थ उपन्यासों में ही। लोक या किसी जनसमाज के बीच काल की गति के अनुसार जो गूढ़ और चिंत्य परिस्थितियाँ खड़ी होती रहती हैं उनको गोचर रूप में सामने लाना और कभी–कभी निस्तार का मार्ग भी प्रत्यक्ष करना उपन्यासों का काम है।"[1] हिन्दी साहित्य के उद्भव और विकास के संदर्भ में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी साहित्य की उपन्यास विधा को लेकर लिखते हैं "उपन्यास आधुनिक युग की देन है। नए गद्य के प्रचार के साथ–साथ उपन्यास का प्रचार हुआ है। आधुनिक उपन्यास केवल कथा–मात्र नहीं हैं, और पुरानी कथाओं और आख्यायिकाओं की भाँति कथा–सूत्र का बहाना लेकर उपमाओं, रूपकों, दीपकों और श्लेषों की छटा और सरस पदों में गुफित पदावली की छटा दिखाने का कौशल भी नहीं है। यह आधुनिक वैयक्तिकवादी दृष्टिकोण का परिणाम है। इसमें लेखक अपना एक निश्चित मत प्रकट करता है, और कथानक को इस प्रकार से सजाता है कि पाठक अनायास ही उसके उद्देश्य को ग्रहण कर सके और उससे प्रभावित हो सके। लेखकों का इस प्रकार का वैयक्तिक दृष्टिकोण ही नए उपन्यासों की आत्मा है। कथानक को मनोरंजक और निर्दोष बनाकर और पात्रों के सजीव चरित्र–निर्माण तथा भाषा की अनाडंबर सहज प्रवाही योजना के द्वारा उपन्यासकार अपने वैयक्तिक मत को ही सहज स्वीकार्य बनाता है। जिस उपन्यासकार के पास आधुनिक युग की जटिल समस्याओं के समाधान के योग्य अपना प्रबल वैयक्तिक मत नहीं है, वह आधुनिक पाठकों को आकृष्ट नहीं कर सकता।" [2]

अल्प काल में ही हिन्दी उपन्यास का अत्यंत तीव्र गति से विकास हुआ है और आज वह विश्व–साहित्य में आदरणीय स्थान पाने योग्य है। अपनी समस्त आधुनिक भौतिक एवं मानसिक जटिलताएँ लिए हुए जीवन उसमें इकाई बनकर समा गया है। मध्ययुग में जो स्थान महाकाव्य का था, अथवा भारतेन्दु युग में जो स्थान नाटक का था, वहीं, वरन युग के अनुकूल उससे भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण स्थान आज उपन्यास का है। उसके द्वारा मानव मन तथा जीवन की अनेक जटिल और विषम समस्याएँ सुझाने का पुनीत प्रयास किया जा रहा है और धीरे–धीरे वह राष्ट्र की सीमाएँ पार कर अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है। [3]

'आधुनिक कथा साहित्य' कहते ही श्रोता जिस आशय को ग्रहण करते हैं वह स्पष्ट ही नयी कहानी, अथवा, नया उपन्या और एंटी–नावेल है। नये बोधवाले ये नाम स्वाधीनता के बाद हिन्दी में आये हैं। यह भी कहा जा सकता है कि ये नाम परम्परा के विरोध–स्वरूप प्रचलित हुए और हिन्दी कथा साहित्य की विकास–दिशा के नये मील–स्तम्भ बने। प्रेमचन्द, प्रसाद और उनके बाद यशपाल, अज्ञेय, जैनेन्द्र की कहानियाँ आज की नयी कहानी के लिए केनवस–भर थीं। [4]

आज का कथ साहित्य स्वाभाविक रूप में विचार और भाव, चिन्तन और अनुभूति, व्यक्ति और समाज की उन सभी अंतःधाराओं की परिणिति और प्रतिफलन है जो प्रेमचन्द के बाद से हमारे कथा साहित्य में प्रगट हुई। और पिछली पीढ़ी के कथाकारों से नये कहानीकार का इतना तीव्र संघर्ष, अपने स्वस्थतम रूप में, एक हद तक निश्चय ही, इसी कारण है कि नया कहानीकार उस दाय को अस्वीकार करता है अथवा करता जान पड़ता है। आज का कथाकार उसी भूमि पर खड़ा है जो जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल आदि ने अपने ढंग से प्राचीनतापरक तत्वों से संघर्ष करके तैयार की थी। [5]

हिन्दी साहित्य की उपन्यास विधा को समृद्ध करने में देश के अनेक साहित्यकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें सिर्फ पुरुष ही नहीं अपितु महिला लेखिकाओं ने भी अहम भूमिका का निर्वाह किया है। गौरी पंत शिवानी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, चित्रा मुद्गल, नासिरा शर्मा, मृणाल पाण्डे एवं ममता कालिया आदि देश की प्रसिद्ध महिला साहित्यकार हैं।

इनमें ममता कालिया का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है जिन्हें वर्ष 2017 का प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' वर्ष 2009 में प्रकाशित उनकी चर्चित कृति दुक्खम सुक्खम के लिए प्रदान किया गया। यह 27वां व्यास सम्मान था। दुक्खम सुक्खम के अलावा 'बेघर', 'नरक–दर–नरक', 'सपनों की होम डिलिवरी', 'कल्चर वल्चर', 'जांच अभी जारी है', 'निर्मोही', 'बोलने वाली औरत', 'भविष्य का स्त्री विमर्श' समेत कई पुस्तकें हैं। उनकी कहानियां भी काफी चर्चित रही हैं। ममता जी की रचनाओं में मध्यवर्ग का अलग ही चित्रण मिलता है। अपने पात्रों का सजीव चित्रण करने वाली ममता कालिया की भाषा सहज और सरल होती है। यही कारण है कि उन्होंने अपनी समकालीन लेखिकाओं से अलग मुकाम बनाया है।

ममता कालिया पाँच दशकों से हिन्दी साहित्य का कोश बढ़ाती आई हैं, कई पुरस्कारों से अलंकृत हुई हैं, परन्तु अभी तक उनके लेखन पर अन्य रचनाकारों जितना व्यापक काम नहीं हुआ। ममता कालिया 'नारीवादी' न होते हुए भी आधुनिक भारत में स्त्री की स्थिति पर नई रोशनी डालने वाली लेखिका रही हैं, उनका रूढ़ियों–नुस्खों से मुक्त, साहित्य के मानदण्डों पर खरा उतरता और साथ ही साथ आन्दोलनबद्ध न होने पर भी महत्वपूर्ण और बहुआयामी प्रश्न उठाता हुआ लेखन लोकप्रिय और पाठकों के लिए सदा रूचिकर सिद्ध हुआ है। इन गुणों को देखते हुए ममता कालिया का कृतित्व निःसंदेह अधिक व्याख्या के योग्य है। [6.]

उपन्यास की संरचना पुस्तक के लेखक गोपाल राय लिखते हैं –"सच पूछें तो प्रत्येक उपन्यास उपन्यासकार के निजी अनुभवों का ही दस्तावेज होता है और हर उपन्यासकार अपने को अपनी रचना में पूरी तरह से अभिव्यक्त करके ही सन्तुष्ट होता है। जिन उपन्यासकारों की संवेदन–क्षमता अधिक होती है, जो स्वयं को ही नहीं, बल्कि अपने चारों ओर पसरे समाज को भी सूक्ष्मता से देखते हैं और उसे अपनी अनुभूति का विषय बना तेले हैं, जिन उपन्यासकारों में अपने को अपने परिवेश में घुला देने की क्षमता होती है, वे अपनी कृति में आसानी से पहचान में नहीं आते।" [41.] यही विशेषता हमें प्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया की कृतियों में देखने को मिलती है। हिन्दी कथा साहित्य के परिदृश्य पर ममता कालिया की उपस्थिति सातवें दशक से निरन्तर बनी हुई है। लगभग आधी सदी के काल खण्ड में ममता कालिया ने 200 से अधिक कहानियों की रचना की है। ममता कालिया के व्यक्तित्व और कृतियों पर देश–विदेश में व्यापक शोध–कार्य हो रहे हैं। स्वातंत्र्योत्तर भारत के शिक्षित, संघर्षरत और परिवर्तनशील समाज का सजीव चित्र इन कहानियों में अपने बहुरंगी आयामों में दिखाई देता है। हिन्दी कथा–साहित्य में ममता कालिया की तरह लिखने वाले रचनाकार विरल हैं जो गहरी आत्मीयता, आवेग और उन्मेष के साथ जीवन के धड़कते क्षण पाठक तक पहुँचा सकें। इनके लेखन में अनुमति की ऊष्मा अनुभव की ऊर्जा के साथ रची बसी है। 'उसका यौवन' 'लड़के', 'आपकी छोटी लड़की' मनोविज्ञान वसंत सिर्फ एक तारीख 'राएवाली' वैसी कहानियाँ हैं जैसी जिंदगी है, तुर्श और शीरीं, सम और विषम। ममता कालिया की कहानियों में जिस संवेदनशील, संतुलित, समझदार लेकिन चुलबुले, मानवीय सहानुभूति से आलोकित व्यक्तित्व की झलक मिलती है वह उनके दृष्टिकोण की मौलिकता से दुगुनी दमक पाती है।

ममता कालिया की रचनाओं में कलावादी कसीदाकारी न होकर जीवनवादी यथार्थ का सौन्दर्य बोध है। इस रचनाकार ने अपने समय और समाज को पुनर्परिभाषित करने का सृजनात्मक जोखिम लगभग हर कहानी में उठाया है। कभी वे समूचे परिवेश में नया सरोकार ढूँढती है तो कभी वे वर्तमान परिवेश में नयी नारी की अस्मिता और संघर्ष को शब्द देती हैं। समकालीन कथा–परिदृश्य में जिस नारी–विमर्श का शोर सुनाई दे रहा है, उसका मौलिक स्वरूप व सरोकार ममता कालिया की कहानियों तथा उपन्यासों में अपनी समर्थ उपस्थिति बनाये हुए है। जब ये कहानियाँ लिखी गई तब नारी– विमर्श ना तो बिकाऊ माल था न चालू नुस्खा। लेकिन ममता कालिया ने बहुत पहले यह देख लिया था कि स्त्री के जीवन में अधिकार का संघर्ष सतत चलने वाला क्रम है। अपने सोच एवं विचार में यह रचनाकार पूर्ण तथा आधुनिक और निषेध–मुक्त है। [7.]

इस प्रकार हम देखते हैं कि आधुनिक कथा साहित्य को समृद्ध करने में ममता कालिया ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। औद्योगिकरण और नगरीकरण के परिणामस्वरूप बदलती सामाजिक परिस्थितियाँ, महानगरीय जीवन शैली, अकेलापन, निराशा, अवसाद, यौन शुचिता, स्त्री मुक्ति की अवधारणा आदि अनेक आधुनिक मुद्दों पर लेखिका ने पूरे साहस के साथ अपने अनुभवों को अभिव्यक्त किया है।

संदर्भ सूची

1. शुक्ल, आचार्य रामचंद्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली, छठा संस्करण–2009, पृ–267.
2. द्विवेदी, हजारी प्रसाद, हिन्दी साहित्यः उद्भव एवं विकास, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, 2003, पृ–218.
3. उपाध्याय, देवराज, आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, 1956, पृ–प्राक्कथन।
4. अवस्थी, देवीशंकर, नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, बक्षी, रमेश, कथाकार की अपनी बात : आज की कहानी के संदर्भ में, राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974, पुनर्मुद्रित 2008, पृ–106.
5. अवस्थी, देवीशंकर, नयी कहानी सन्दर्भ और प्रकृति, जैन, नेमीचंद, नई कहानीः कुछ विचार, राजकमल प्रकाशन लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974, पुनर्मुद्रित 2008, पृ–119.
6. राय, गोपाल, उपन्यास की संरचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पृ–216.
7. https://www.pustak.org/index.php/books/bookdetails/2893